सुमित्रा नंदन पंत की कविता 'मोह' का भावार्थ

~ डॉ. अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी

(हिंदी विभाग, एसजीजीएस कॉलेज, पटना सिटी)

[कक्षा, स्नातक-**द्वितीयवर्ष(प्रतिष्ठा)**, में पहले पढ़ाये गए विषय को दुहराने(रिवीजन) के लिए इस लेख की प्रस्तुति की जा रही है।]

कविता : मोह

छोड़ द्रुमों की मृदु-छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले! तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?
भूल अभी से इस जग को!

तज कर तरल-तरंगों को,
इन्द्र-धनुष के रंगों को,
तेरे भ्रू-भंगों से कैसे बिंधवा दूँ निज मृग-सा मन?
भूल अभी से इस जग को!

कोयल का वह कोमल-बोल,
मधुकर की वीणा अनमोल,
कह, तब तेरे ही प्रिय-स्वर से कैसे भर लूँ सजनि! श्रवन?
भूल अभी से इस जग को!

ऊषा-सस्मित किसलय-दल,
सुधा रश्मि से उतरा जल,
ना, अधरामृत ही के मद में कैसे बहला दूँ जीवन?

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College

भूल अभी से इस जग को!

कठिन शब्दों का अर्थ :

द्रुम - पेड़ / मृदु-छाया - सुखद छाया / माया - सम्बन्ध या जुड़ाव / बाल-जाल - बाँध लेने वाले आकर्षक बाल / लोचन - आँख / तरल-तरंग - सुख देने वाली तरंगें / भ्रू-भंग - भौंहों की भंगिमा / निज - अपना / मृग-सा - हिरण जैसा / मधुकर - भौंरा / प्रिय-स्वर - प्यारी आवाज / श्रवण - कान / ऊषा-सस्मित - भोर की मुस्कान से युक्त / किसलय-दल - नए पत्तों का समूह / सुधा रश्मि - अमृत जैसी किरणें / उतरा जल - जीवन-तत्त्व, जिंदगी / अधरामृत - होंठों का अमृत / मद - नशा

भावार्थ :

इस कविता में एक तरफ प्रकृति का सौंदर्य और उसका खिंचाव दिखाया गया है। दूसरी तरफ एक स्त्री का सौंदर्य और उसका खिंचाव दिखाया गया है। इन दोनों के बीच में फँसे कवि के किशोर मन की कशमकश है। उसकी दुविधा है कि पेड़ों की सुखद छाया और प्राकृतिक आकर्षण को छोड़कर वह किसी बाला या किशोरी के बालों में अपनी आँखों को कैसे उलझाए। प्राकृतिक तरंगों और इंद्रधनुष के रंगों की दुनिया को छोड़कर एक बाला के भौंहों की भंगिमा में कैसे खो जाए।

कवि का किशोर मन उलझ गया है कि वह कोयल के मीठे बोल और भौंरे की वीणा जैसी गुंजार के बजाय प्रेमिका की मीठी बोली से ही अपने कानों को कैसे तृप्त होने दे। प्रकृति जहां भोर से पेड़ों के पत्ते मुस्काते हैं और सूर्य की किरणों से दुनिया भर में जीवन का अमृत फैलता है, उसे छोड़ कर प्रेमिका के होंठों से मिलने वाले अमृत ही से अपने जीवन को वह कैसे बहलाये। वह कहता है कि यह जग भूल जाओ। उसी प्रकृति के सौंदर्य से अपने को जोड़ लो।

इस कविता की आलोचना में एक बात यह कही गयी है कि कवि पलायनवादी है और इंसानों की दुनिया को छोड़ पर भागना चाहता है। लेकिन मेरा मानना है कि कविता एक ख़ास मनःस्थिति या मूड को रखने का काम भी करती है। इसे उसी रूप में देखा जाय। यह कविता पंत के 'पल्लव' नामक संग्रह की कविता है। इस संग्रह की कविताओं पर सुमित्रा नंदन पंत का कहना है कि 'वीणा' और 'पल्लव' मेरे प्राकृतिक साहचर्य काल की कविताएं हैं। स्पष्ट है कि प्रकृति के सुकुमार कवि के प्राकृतिक आकर्षण के साथ पैदा हुई दुविधा भी इसमें व्यक्त हुई है।

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College

सुमित्रा नंदन पंत की यह दुविधा क्यों है? दरअसल पंत का जीवन प्रकृति की गोद में बीता था। उनकी शैशवावस्था और बाल्यावस्था प्रकृति के गहन साहचर्य में बीती थी। आगे जब किशोरावस्था आयी तो उन्हें बाला या स्त्री का सौंदर्य भी आकर्षित करते लगा। किशोरावस्था में ऐसा होना स्वाभाविक है। यह शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था में नहीं होगा। इसलिए यहाँ कविता में जो दिख रहा है वह पंत की किशोरावस्था की कशमकश है कि प्रकृति की तरफ जाएं या नारी सौंदर्य की तरफ। इस कशमकश को पंत ने बड़ी सरलता और ईमानदारी से कविता में पेश कर दिया है। आलोचक हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना सही है कि 'पल्लव' के भावों की अभिव्यक्ति में अद्‌भुत सरलता और ईमानदारी थी।

इस कविता में मानवीकरण और कल्पना की उड़ान भी देखी जा सकती है। मानवीकरण इस रूप में देखा जा सकता है कि यहां मानव सौंदर्य के विकल्प के रूप में प्रकृति के सौंदर्य को दिखाया गया है। वहाँ भी मानव जैसी चेष्टाएँ दिखाई गयी हैं। कल्पना की शक्ति यह है कि बड़े सुन्दर प्राकृतिक बिम्ब या चित्र खींचे गए हैं। ये चित्र पूरी गतिशीलता लिए प्रकृति के सौंदर्य और महत्व को हमारे सामने रखते हैं। छायावाद के प्रकृति चित्रण के मामले में सुमित्रानंदन पंत की तारीफ़ इसीलिये की जाती है।

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College, Pataliputra University

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College